# हिन्दी - पुष्प

*(साउथ एशिया टाइम्स का हिन्दी परिशिष्ट)*

वर्ष-५ अङ्क-१०  मई, २००९

## सम्पादकीय

### अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक-दिवस, मातृ-दिवस तथा प्रसूति-अवकाश

१ मई को अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक-दिवस मनाया जाता है। यह दिन श्रमिक संगठनों के महत्वपूर्ण योगदान की याद दिलाता है और कार्य-दिवस पर ८ घंटों की सीमा प्राप्त करने के संघर्ष की कहानी बताता है। परन्तु हमारे श्रमिक वर्ग का एक अंग है, जो आज भी न्याय की खोज कर रहा है। यह वर्ग है, नवजात शिशुओं की कामकाजी माताओं का। एक समय था जब पिता बाहर का काम करते थे और माँ घर सँभालती थी, बच्चों का लालन-पोषण करती थी। अब बहुधा ऐसा नहीं होता है। आज स्त्रियाँ भी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर हर काम करती हैं। ऐसी स्थिति में, गर्भावस्था में, उनके लिये, प्रसूति-अवकाश आवश्यक हो जाता है ताकि उन्हें शिशु के जन्म पर उसकी देखभाल का समुचित अवसर मिल सके। विशेषज्ञों के अनुसार नवजात शिशु के लिये सबसे पौष्टिक आहार उसकी माँ का दूध होता है। असमंजस की बात यह है कि आज भी विभिन्न देशों में इस बारे में एक राय नहीं है कि प्रसूति-अवकाश कितना लम्बा हो और नवजात शिशुओं की माताओं को क्या सुविधाएँ उपलब्ध हों। पूरे विश्व में प्रसूति-अवकाश की अवधि में काफ़ी अंतर है। उदाहरण के लिये, स्वीडन (१६ महीने तक वैतनिक); ऑस्ट्रेलिया (एक वर्ष तक अवैतनिक); अमेरिका (१२ सप्ताह तक अवैतनिक); भारत व पाकिस्तान (१२ सप्ताह तक वैतनिक); यूनाइटेड किंगडम (३९ सप्ताह तक वैतनिक तथा १३ सप्ताह तक अवैतनिक) में इस सम्बन्ध में गहरा मतभेद है। क्या इसका कारण यह है कि विभिन्न देशों में मातृत्व का महत्व भिन्न-भिन्न है? आपकी राय में प्रसूति-अवकाश की अवधि क्या होनी चाहिये और क्यों? यह अवधि वैतनिक होनी चाहिये या अवैतनिक? इस अवकाश का आर्थिक भार किसे उठाना चाहिये?

सभी माताओं को मातृ-दिवस की शुभ-कामनाएँ।

हिन्दी-पुष्प के इस अङ्क में कुछ मिश्रित कविताएँ हैं, कहानी 'समय शेष' का चौथा भाग है। साथ में 'हँसने की बारी है' तथा सूचनाएँ भी हैं। आशा है आपको यह अङ्क पसंद आएगा। आपके विचारों, सुझावों तथा रचनाओं का हम स्वागत करेंगे।

-दिनेश श्रीवास्तव

## लेखकों से निवेदन

*१. कृपया अपनी रचनाएँ (कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चुटकुले, मनोरंजक अनुभव आदि) निम्नलिखित पते पर भेजे -*

डा० दिनेश श्रीवास्तव, १४१ हायट स्ट्रीट. रिचमंड, विक्टोरिया ३१२१

**(Dr. Dinesh Srivastava, 141 Highett Street, Richmond, Victoria 3121)**

*२. हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार की जाएँगी परन्तु इलेक्ट्रानिक रूप से हिन्दी-संस्कृत फ़ांट मे रचनाएँ भेजे तो उनका प्रकाशन हमारे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।*

*ई-मेल से रचनाएँ भेजने का पता है-*

**dsrivastava@optusnet.com.au**

*३. अपनी रचनाएँ भेजते समय अपनी रचना की एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रखे।*

## काव्य-कुंज

### चुनाव की घोषणा

**- पराशर गौड़, कनाडा**

जैसे ही, चुनाव की हुई घोषणा,
उम्मीदवारों का ऐसा ताँता लगने लगा
जो हम ने पहले कभी नहीं देखा था
वह सब से आगे खड़ा था।

राजनीतिक पार्टियाँ .....
अपने-अपने उम्मीदवारों को
वोट-बैंकों से भुनाने लग गई थीं,
उनके काले कारनामों पर
सफ़ेदियाँ पोतने लगी थीं।

सभाओं के.....
आयोजनों पर आयोजन होने लगे थे
छुट भय्या नेता.....
दिग्गज नेताओं की
चप्पलें उठाने लगे थे।

उम्मीदवारों का परिचय
मंच से दिया जाने लगा
नेता उनके बारे में कहने लगा
ये.....
इस इलाक़े के माने हुए (गुंडा/दादा) हैं
इनकी तस्वीरें तो,
अख़बारों में कई बार छपी हैं।
ये उम्मीदवार.....
जो आप देख रहे हैं
ये आपके लिये न सही

पर पार्टी के लिये कई बार
अंदर-बाहर आते-जाते रहे हैं
समय साक्षी और जनता गवाह है
पुलिस चौकी इनका मायका और
जेल इनकी ससुराल है

विपक्षी.....
इनकी इस छवि को
पचा नहीं पा रहे है
इन पर आरोप पर आरोप
लगाये जा रहे हैं कि...
ये गौ चारा, रेप, मर्डरों में लिप्त हैं
ऐसा प्रचार कर रहे हैं।

अरे भाई.....
किसी न किसी को तो वह
चारा खाना ही था
उसको कहीं न कहीं तो
ठिकाना लगाना ही था।

रही "रेप और 'मर्डरों" की बात
तो हम साफ़-साफ़ कहते हैं
ये तो हमारी पार्टी के 'सिम्बल' भी हैं
हमारे 'मैनीफ़ेस्टो' में भी हैं
जो जितना करवाएगा
उतना ही ऊँचा पद पाएगा।

हम आपको चेतावनी देते हैं
और चिल्ला-चिल्ला कर कहते हैं
विपक्षी सुन लें.....
और आप देख लें.....
आप वोट दें या न दें
आप वोट डालें या न डालें
आप का वोट पड़ेगा, ज़रूर पड़ेगा
हमारा यह उम्मीदवार.....
जीतेगा, अवश्य जीतेगा।

### खादी, ख़ाकी और बाक़ी वाले

**- राजेन्द्र चोपड़ा, मेल्बर्न**

देश को खा गए खादी वाले
अनपढ़ खूसट नेता जो हम ने पाले
देख-भाल न कर सकते बूढ़े जो अपनी
देश की बागडोर न जाने कैसे सम्भालें

सब को खा गए ख़ाकी वर्दी वाले
जो सीना ज़ोरी से रिश्वत खा लें
जो स्वयं ही खोलें बंद-जेल के ताले
जब रक्षक ही भक्षक बन जाये तो
कानून-व्यवस्था कौन सम्भाले

खून चूसते काले अफ़सर,
साहिब दफ़्तर वाले
क्लर्क बाबू जगत-जँवई, कुर्सी वाले

बिना नग़द थमाए जो काम न करते
भिखमंगे तानाशाह, फाइलें हैं सम्भाले

अति सयाने पंडित-पंडे,
जटाधारी लूटने वाले
निकृष्ट नशा-पदार्थ सेवन कर झूमने वाले
साधू-वाधू घर-घर, गलियों में घूमने वाले
झूठा भविष्य बता
दूजों को भटकाने वाले

काले -बाज़ार से
काला-धन कमाने वाले
परम स्वार्थी नेताओं के पालतू पिल्ले
दहेज-माँगते, तज लाज,
बेशर्म लड़के-वाले
वह अति घिनौना काम हैं करने वाले

हम सब को दें चुनौती
आतंकी बाहर वाले
दुश्मन सब जानते हैं,
सोते रहते हैं रक्षा वाले
जब सीमा पार से
बे रोक आ जाएँ मारने वाले
तो निश्चय ही
देश के अंदर हैं देशद्रोही घर वाले

दिखाऊ शेर-खाल पहने, ये भेड़िये
बन दीमक धीरे-धीरे खाने वाले
पक्के-शाकाहारी जल्लाद
बग़ल छुरी से काटने वाले
किस-किस की करतूत बताएँ राजन
खाल नोचते हैं पिशाच सब,
अवसरवादी सा.....।

### एक ग़ज़ल

**-प्रो० भागवत प्रसाद मिश्र "नियाज़"**
**अहमदाबाद, भारतवर्ष**

मैं जानता हूँ मेरे बाद
यहाँ का क्या होगा
न महफ़िलें सजेंगी, न वह समाँ होगा।
पड़े मिलेंगे टूटे जाम और पैमाने,
नज़र न आयेंगे मैकश*
न मैकदा** होगा।
परिंदे दूर तक उड़ते न नज़र आयेंगे
क़रीब बाग़ में उजड़ा सा आशियाँ होगा।
जहाँ मैं जाता था हर रोज़ सिजदा करने
मेरे शायर का वहाँ टूटा इक मकाँ होगा।
हमारी ज़िन्दगी का हश्र
यही होगा 'नियाज़'
दरो-दीवार से क्या अपना वास्ता होगा?

---
* मैकश - मदिरा पीने वाला
** मैकदा - मदिरालय
---

# विक्टोरियन स्कूल आफ़ लैंग्वेजेज़ द्वारा संचालित कुछ हिन्दी कक्षाएँ ख़तरे में

हाल में मिले एक समाचार के अनुसार, विद्यार्थियों की संख्या कम होने के कारण कुछ हिन्दी कक्षाओं के बंद किये जाने की सम्भावना है। इसलिये आवश्यक है कि आप अपने बच्चों को शीघ्र इन कक्षाओं में प्रवेश दिलायें। ये कक्षाएँ निम्नलिखित केन्द्रों में लगती हैं-

**शनिवार, ९ बजे से १२ बजे तक** - ब्लैकबर्न (कक्षा १-१२ तक); सनशाइन (कक्षा १-११ तक);

डैन्डेनांग(कक्षा १-१२ तक)।

**मंगलवार (सायंकाल ४ बजे से ७ बजे तक)** - ग्लेन वेवर्ली (कक्षा १-१२ तक)।

अधिक जानकारी के लिये हिन्दी की संयोजिका श्रीमती मंजीत ठेठी को (०३) ९८०० ५०१४ अथवा (०४००) ०९८ ०८१ पर फ़ोन करें अथवा ई-मेल - manjeet.thethi@gmail.com पर सम्पर्क करें। आप विभिन्न केन्द्रों के व्यवस्थापकों से भी निम्नलिखित फ़ोन नम्बरों पर सम्पर्क कर सकते हैं-**ब्लैकबर्न** - टोनी कूयांग (९८४० ००८२); **ग्लेन वेवर्ली** - कोनी ब्रम्बल (९८०३ ४३२६); **सनशाइन** - पाशालय एजलेजास् (९६८९ ११६६); **डैन्डेनांग**- एन्जेला नटोली (९७९१-९२८९)

# बधाई हो

१. डल्लास, अमेरिका निवासी, हिन्दी पुष्प की नियमित कवियत्री, लेखिका तथा पाठक **श्रीमती रचना श्रीवास्तव** को, जिन्होंने वर्ष २००८ की 'हिन्दी युग्म यूनिकवि' प्रतियोगिता में सर्वप्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।
अधिक जानकारी के लिये, निम्नलिखित वेब साइट देखिये - http://kavita.hindyugm.com/ 2009/01/poet-from- us-and-reader-from -india.html

२. मेल्बर्न, ऑस्ट्रेलिया निवासी, हिन्दी पुष्प के नियमित पाठक तथा कवि **श्री हरिहर झा** को जिन की दो कविताएँ "तेरे विस्मय पर" तथा "मुग्ध हो कर" अँग्रेज़ी अनुवाद सहित "हिडेन ट्रेज़र-बाइलिंगुअल एन्थॉलोजी" नामक पुस्तक में प्रकाशित हुईं। प्रकाशक - मेल्बर्न पोयट्स् यूनियन। गैलेक्सी पब्लिकेश्न्स द्वारा प्रकाशित एक और एन्थॉलोजी में उनकी अँग्रेज़ी कविता "साक़ी" भी प्रकाशित हुई है। इनकी हिन्दी तथा अँग्रेज़ी कविताओं के लिये निम्नलिखित वेबसाइट देखिये - http://boloji.com/writers/hariharraijha.htm http://poetry.com/Publications/search.asp?First=harihar & Last=jha& submit.x=30 &submit.y=11 http://hariharjhahindi.wordpress.com/ http://hariharjha. wordpress.com/

३. हिन्दी पुष्प के नियमित पाठक तथा हिन्दी-निकेतन के भूतपूर्व सभापति, आर०एम०आई०टी० विश्वविद्यालय, मेल्बर्न में 'एप्लाइड साइंसेज़' विभाग के संकायाध्यक्ष ('डीन'), **प्रोफ़ेसर, सुरेश भार्गव** को राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा 'डाक्टर आफ़ साइंस' की सम्मानदायक ('आनरेरी') उपाधि प्रदान किये जाने पर

४. मेल्बर्न, ऑस्ट्रेलिया निवासी, हिन्दी पुष्प के नियमित पाठक तथा समाज-सेवक दंपति **डाक्टर आभा व डाक्टर अशोक अस्थाना** को उनके विवाह की माणिक जयंती (४०वीं वर्षगाँठ) पर

५. मेल्बर्न, ऑस्ट्रेलिया निवासी, हिन्दी पुष्प के नियमित पाठक, रचनाकार तथा सहयोगी दंपति **श्रीमती सुधा व श्रीमान् विजय कुमार अग्रवाल** को उनके विवाह की स्वर्ण-जयंती (५०वीं वर्षगाँठ) पर

श्रीमती सुधा व श्रीमान् विजय अग्रवाल अपने विवाह की स्वर्ण-जयंती (५०वीं वर्षगाँठ) पर

कहानी

# समय शेष (भाग ४)*

*(इस कहानी के पिछले भागों में आपने पढ़ा कि दूध लेने के स्थान पर किस प्रकार दशरथ बाबू की एक वृद्ध महिला से भेंट हुई और उनकी टूटी चप्पल देख कर, दशरथ बाबू ने उन्हें अपनी चप्पल दे दी। दूसरे दिन, सुमित्रा ने दशरथ बाबू की चप्पलें लौटा दीं और नंगे पैर दूध लेने आने लगी। धीरे-धीरे, दोनों ने एक दूसरे का नाम जान लिया और दूध की वैन की प्रतीक्षा करते समय आपस में बातें करने लगे। बातों का मुख्य विषय होता था राजनीति... कि कौन कौन नेता चोर है और अपराधों में डूबा हुआ है। बगल में बैठे आदमी के अनुसार, डा. नरेंद्र के लड़के के अपहरण में भी "पुलिस क्या करेगी? खुद मुख्यमंत्री का उसकी पीठ पर हाथ है.....ये पुलिस वाले साले सब निकम्मे हैं। लीजिये, अब आगे की कहानी पढ़िये। -सम्पादक।)*

**- युगल**

क्या ठिकाना कि पुलिस से साँठ-गाँठ हो। ज़्यादा देर होगी, तो बच्चे के साथ कोई हादसा भी हो सकता है। फिरौती देकर बच्चे को छुड़ा लो"। यह है हमारा प्रशासन। देखिए, हम कितने सुरक्षित हैं!
दशरथ बाबू स्थिति की यथार्थता की स्वीकृति में चुपचाप सिर हिला रहे थे। तभी वह आदमी उठकर खड़ा हो गया।
दशरथ बाबू ने पूछा-"क्यों खड़े हो गए? वैन आ रही है क्या?"
वह आदमी मुस्कराया-"नहीं, वो आ रही हैं। यहाँ बैठेंगी न?"
सुमित्रा पार्क के अन्दर आ रही थी। दशरथ बाबू सोचने लगे, सुमित्रा मेरे पास बैठती है - लोगों की नज़र में यह बात है।
अंदर आते-आते सुमित्रा लौट गई। वैन आ रही थी।
अगले दिन दशरथ बाबू बूथ पर नहीं दिखायी दिये। दूसरे दिन दूध लेकर भी सुमित्रा पार्क में अटकी रही। एक औरत उससे बात कर रही थी।
औरत चली गई, तो सुमित्रा ने अपने आप से पूछा, क्यों अटक गई थी वह भला? घर में दूध का इंतजार हो रहा होगा। लड़के को चाय तो चाहिए ही। लड़के से ज़्यादा तो बहुरिया को तलब होगी। चाय के बिना तो उसकी हाजत ही साफ़ नहीं होती। इसलिए वह थोड़ा सा दूध बचा कर रख लेती है। फिर भी बकझक तो करेगी ही। पर मैं क्या यहाँ मटरगश्ती कर रही हूँ?
दशरथ बाबू तीसरे-चौथे दिन भी नहीं दिखे।
एक दिन एम-२४ की कालबेल बजी। दरवाज़ा खुला। घर की बहू ने देखा, कोई वृद्धा महिला दरवाजे पर खड़ी हैं। पूछ रही थीं- "दशरथ बाबू कहाँ हैं?"
"वे तो यहाँ नहीं हैं। क्या काम है?"
"काम! काम क्या रहेगा?" महिला असमंजस में थीं।
बहू शिष्टतावश बोली-"आइए, अंदर आइए!"
"नहीं-नहीं, कई दिनों से नहीं दिखे। मुझे लगा, कहीं..."
"वे गाँव गए हैं।"
अंदर से किसी पुरुष कंठ ने पूछा-"कौन है, निनी?"
निनी ने उत्तर दिया-"एक हैं, बाबू जी को पूछ रही हैं।"
पुरुष प्रत्यक्ष हुआ-"आपको तो मिल्क-बूथ पर देखा है।"
"हाँ बूथ पर से दूध लाने मैं ही जाती हूँ"
"ओ! आइए, बैठिए। चाय पीकर जाइएगा।" बहू ने आग्रह किया।
चाय के बीच में सुमित्रा बोली-"गाँव गए हैं, न जाने कब लौटें।"
"नहीं, जल्दी ही लौट आना चाहिए। वैसे सब कुछ उनकी इच्छा पर निर्भर है।"
सुमित्रा उठती हुई बोली-"यह घर कितना अच्छा है। कोई बच्चा..."
बहू मुस्कराई-"है। स्कूल गया है।"
"बेटी! घर सुगृहिणी और बच्चे से ही होता है। नहीं तो इन निर्जीव दीवारों में क्या रखा है?" कहते-कहते लगा, महिला का कंठ सिक्त हो गया है।
**(क्रमशः)**

## महत्वपूर्ण तिथियाँ

अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस (१ मई), महात्मा बुद्ध का जन्म दिवस तथा विशाखा पूजा (९मई), मातृ-दिवस (१० मई), गुरु अर्जन का शहीद-दिवस (१६ जून)।

## सूचनाएँ

१. **महफ़िल-नाइट** (शुक्रवार, १५ मई)
**गायक** - 'सुपरस्टार म्यूज़िकल ग्रुप' (शांति बालगोबिन्द, प्रतिमा फ्रासिंस, बार्बरा नैय्यर, सुनीला पटेल, मीनू वाधवा, चार्ल्स विलियम्स, सुधीर, विकाश रानिगा)
**वादक** - बॉस गिटार (जीवा सतगुनम), रिदम गिटार (डाक्टर शरतचन्द्रन), कीबोर्ड (शारमिनी सतगुनम)
**स्थान** - कोबर्ग में लुइसा स्ट्रीट और विक्टोरिया स्ट्रीट के नुक्कड़ पर स्थित कोबर्ग पुस्तकालय हॉल।
**समय**- रात्रि के ८ बजे से १० बजे तक।
सभी संगीत प्रेमी आमंत्रित हैं। प्रवेश निःशुल्क है।
अधिक जानकारी के लिये, डाक्टर शरतचन्द्रन को ९३६६-५४४ पर फ़ोन कीजिए।

२. भारत के प्रसिद्ध कलाकार, **अशोक खोसला** द्वारा प्रस्तुत है-**ग़ज़लों और बालीवुड के पुराने गीतों की एक शाम** (रविवार, २४ मई)।
**समय** - दोपहर के ४.३० बजे।
**स्थान** - बॉलविन हाई स्कूल, ४० बुकानन् एवेन्यु, नार्थ बॉलविन, विक्टोरिया।
**टिकट** - २५ डालर।
अधिक जानकारी तथा टिकटों के लिये निम्नलिखित व्यक्तियों से सम्पर्क कीजिये -
अनिल (०४२ २४८ ४६२), मधु (०४१० ५१० ५३५), रजनी (०४१२ ३१९ ३२१)
ई-मेल - tarachandramouli@hotmail.com

३. **संगीत-संध्या** (शनिवार, ६ जून)
**स्थान** - वेवर्ली मेडोज़ प्राइमरी स्कूल, ह्वीलर्स हिल, मेलबर्न (मेलवे संदर्भ ७१ जी ११)
**समय** - रात के ८.०० बजे से १० बजे तक। प्रवेश निःशुल्क है।
अधिक जानकारी के लिए राधेश्याम गुप्त

## अब हँसने की बारी है

### १. विवाह की वर्षगाँठ और फूलों का गुलदस्ता

रमेश अक्सर अपने विवाह की वर्षगाँठ की तिथि भूल जाता था। उसकी पत्नी इस बात पर उस से बहुत नाराज़ होती थी। बहुत सोच-समझ कर रमेश ने एक उपाय खोज निकाला। उस ने अपने शहर के एक प्रमुख फूल-विक्रेता को अपने घर का पता दिया और कहा कि वह हर वर्ष उसके विवाह की वर्ष गाँठ पर, उसकी पत्नी के नाम, उसकी पसन्द के फूलों का एक गुलदस्ता भिजवा दिया करे। यह क्रम कई वर्षों तक चलता रहा। रमेश और उसकी पत्नी दोनों खुश थे। पर एक वर्ष रमेश का भंडा फूट गया जब उसने अपनी पत्नी से पूछा कि "ये फूल बहुत सुन्दर लग रहे हैं। किसने भेजे हैं?"

### २. छुट्टियों में घूमने का कार्यक्रम

मोहन (सोहन से) - तुम ने छुट्टियों में कहाँ जाने का निर्णय किया?
सोहन (मोहन से) - अभी तक कुछ तय नहीं हुआ यार!
मोहन (सोहन से) - क्यों?
सोहन (मोहन से) - मैं सोच रहा था कि इस बार पूरी दुनिया घूमेंगे परन्तु मेरी पत्नी कहती है कि कहीं और चलते हैं।